कभी-कभी यह भी

डा. गंगा प्रसाद गुप्त "बरसैंया"

डॉ. बरसैंया की इन रचनाओं में संवेदनात्मक जीवन के गहरे सरोकार हैं। जहाँ वे अपने को समाज तक ले जाते हैं और समाज को अपने से जोड़कर सर्जना और समाज की अन्योन्याश्रितता का प्रति– पादन करते हैं। इनमें निजता भी है और यथार्थ की कठोरता से संघर्ष करने का संकल्प भी। अमानवीयता के प्रति पीड़ा और आक्रोश तथा मानवता को सबल बनाने की आकांक्षा भी। रोमांटिक कल्पनाओं का सौंदर्य भी और उबड –खाबड़ धरती की कठोरता भी। प्रहार और ललकार भी। तुकान्त,अतुकान्त कविताओं के साथ विनय के पद, दोहे तथा छंद–वैविध्य भी। डॉ. बरसैंया वर्तमान नारी, किसान, मजदूर तथा उपेक्षित वर्ग की सोचनीय स्थिति से चिन्तित तथा व्याप्त भ्रष्टाचार–दुराचार से व्यथित हैं। वे इन सबसे मुक्ति के लिए जगाते भी हैं। भाग्य और भगवान की दुहाई न देकर आत्मबल का मंत्र फूंकते हैं। कहा जा सकता है कि कवि ने अपने पंख आकाश के कोने–कोने तक पसारने की चेष्टा की है। उनका रचना–फलक बड़ा व्यापक है।

भावों में उलझाव नहीं है। भाषा बड़ी प्रांजल व प्रसाद गुण सम्पन्न हैं। अर्थ–बोध के लिए कबायत नहीं करनी पड़ती । 'आशाओं के पक्षी –सावक, प्रतिष्ठा का साँड, तुष्टि की चहकती गोरैया, रंगीन पंखों वाली आस्था, अनास्था के गिद्ध' जैसे नये प्रयोग कविताओं को नया आयाम और आलोक प्रदान करते हैं । 'मानव को मानव रहने दो, क्या तुमने उसको देखा है, क्रांति का सूर्य, नये ईश्वर का निर्माण, तमीज, आसमान, लालवर्णी खून के धब्बे, सहो, उसको भी सहो हे देवी, तथा नाग' जैसी अनेक रचनायें पाठकों को देर तक झनझनाने और झकझोरने में समर्थ हैं ।

मूल्य : 150.00 रुपये

ISBN 81–8160–009–6

कभी–कभी यह भी

(काव्य संग्रह)

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN : 81-8160-009-6

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
प्रथम संस्करण : 2003

प्रकाशक :
सार्थक प्रकाशन
100–ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली–110 049
दूरभाष : 2656 7317

मुद्रक :
बालाजी आफसैट
एम–28, नवीन शाहदरा
दिल्ली–110 032

मूल्य : एक सौ पचास रुपए

KABHI KABHI YEH BHI
(POETRY)
By Dr. Ganga Prasad Gupta "Barsaiyan"

Price : Rs. 150.00

संग्रह के संबंध में

कविता मेरी प्रमुख रचना–विधा नहीं है । समीक्षा, निबंध और व्यंग ही मैंने प्रमुखतः लिखे हैं । उसका आशय यह कतई नहीं है कि कविता से मेरा अलगाव या दूरी रही है । वस्तुतः काव्य में जो रस और आनन्द है वह अन्य किसी भी विधा में नहीं है । छोटे रूप में भी पूर्ण । काव्य सर्वांग विधा है। उसमें भाव, विचार, गति, लय, छन्द, संगीत, सौंदर्य और आनंद आदि सभी कुछ है । 'वाक्यं रसात्मक काव्यम्' इसीलिये कहा गया है । मनीषियों ने तो उसे 'ब्रह्मानन्द सहोदर' तक कहा है । काव्य से कोई व्यक्ति अलग रह ही नहीं सकता–विशेषकर जो कला और साहित्य–सृजन से जुड़ा है । यह आदि विधा है । भाव, चिन्तन, दृष्टि, कल्पना और शिल्प आदि की दृष्टि से काव्य–रचना की क्षमतायें सभी में अलग–अलग होती हैं। जीवन में जब तक सुख–दुख है, प्रकृति में जब तक सौंदर्य का प्रसार है, मनुष्य के भीतर जब तक संवेदना है तब तक काव्य से अलगाव संभव ही नहीं है– ऐसा मेरा मानना है । बड़े से बड़े प्रतिष्ठित लेखकों ने अपने सृजन का शुभारंभ काव्य से किया है– ऐसा प्रायः देखने में आया है । यह अलग बात है कि गद्य–लेखन के आधिक्य ने उनके काव्य को गौण बना दिया हो ।

मैंने भी अपने सृजन का श्री गणेश छन्द–रचना से किया था । सन् 1956--57 में जबलपुर के 'साप्ताहिक संघर्ष' के होली अंक में सर्वप्रथम मेरे दो छन्द प्रकाशित हुये थे और सन् 1957 ही में इलाहाबाद के 'दैनिक भारत' में मेरे दो लेख छपे थे । यही मेरे सृजन–लेखन का शुभारंभ है । पहले कविता और गद्य–लेखन साथ–साथ चला, फिर काव्य पीछे छूट गया । वैसे बीच–बीच में विशेष घटना–प्रसंग या मनः स्थिति में कभी–कभी कवितायें भी मन–मस्तिष्क में उभरती रही हैं जिनको जब तब अवसर पाकर डायरी में शब्द–बद्ध कर लिया । इसीलिये संग्रह का नाम दिया है **'कभी–कभी यह भी।'** इनके पीछे कोई गहरा सोच या आग्रह नहीं है । संवेदनाओं के आवेग में जो लिख गया सो लिख गया । संग्रहित अधिकांश कवितायें समय–समय पर देश की तमाम प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं और संग्रहों में छपती रही हैं। बहुत कम कवितायें हैं जो प्रकाशित नहीं हुईं। मित्रों का आग्रह रहा है कि अनेक गद्य–कृतियों के बाद एक

काव्य–संग्रह भी प्रकाशित होना चाहिये । मैं टालता रहा क्योंकि अपनी काव्य–प्रतिभा की सीमाओं का मुझे भली प्रकार बोध है । कई मित्रों का मानना है कि ये प्रकाशन–योग्य अच्छी रचनायें हैं। इन्हें न छपवाना भी अपराध है । मैं जानता हूँ कि यह मेरे प्रति उनका सदभाव ही है । सेवा–निवृति के बाद मुझे लगा कि अभी तक जो लिखा है उसे समेटना चाहिये । पिछले तीन वर्षो में पॉच पुस्तकें छपने के बाद कविताओं पर भी ध्यान दिया गया और एक संग्रह छपवाने का निश्चय किया। यह जानते हुये भी कि 'कवित विवेक एक नहिं मोरे' जगहंसाई की चिन्ता किये बिना अपनी कविताओं का यह संग्रह मित्रों को समर्पित है क्योंकि कभी–कभी जग–परिहास भी कल्याणकारी होता है––'जग परिहास होय हित मोरा' । परिहास से नये सृजन की प्रेरणा मिलती है । संकल्प–शक्ति बढ़ती है। इसे भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि अपनी रचना सभी को प्रिय होती है । –निज कवित्त केहि लागि न नीका । सरस होय अथवा अति फीका ।' मेरी ये रचनायें फीकी नहीं हैं । इनमें जीवन–जगत, चिन्तन के भाव बराबर हैं, शिल्प भले ही उतना अच्छा न हो । कबीर ने तो 'भाव को ही साँच' माना है । एक कवि का छन्द है–'काव्यं करोमि नहिं चारूतरं करोमि, यत्नं करोमि यदि चारूतरं करोमि ।' यदि मैं भी काव्य में ही रमा रहता तो इन कविताओं का स्वरूप भी अलग होता । फिर भी 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पयें' के अनुसार समाज की वस्तु समाज को समर्पित है । नाक–भौं सिकोड़ने वालों की चिंता करना व्यर्थ है ।

संग्रह के तीन खंड हैं । पहले खंड में छन्द–बद्ध कवितायें हैं जिनमें से कुछ प्रारंभिक दिनों की हैं जब व्यक्ति–मन गगन–बिहारी या भावुक होता है। दूसरे खंड में अतुकान्त कवितायें हैं और वे कुछ वर्ष बाद की हैं । इसका आशय यह नहीं है कि बाद में मैंने छन्द–बद्ध रचनायें नहीं लिखीं । लिखने का क्रम तो अभी तक निरन्तर चल रहा है । रचना सार्थक होनी चाहिए चाहे वह छन्द–बद्ध हो या छन्द–मुक्त । आज कविता को लेकर कुछ कवि खिलवाड़ सा कर रहे हैं। एक ओर एक देम सस्ती और निरर्थक कवितायें–जिनसे हिन्दी–काव्य की छबि ध ूमिल हो रही है और दूसरी ओर अति बौद्धिक भाव–जटिल क्लिष्ट कवितायें जिनसे पाठक वर्ग दूर भाग रहा है । यह दोनों स्थितियॉ काव्य के लिये घातक हैं । इसका आशय यह नहीं है कि अच्छे श्रेष्ठ काव्य का सृजन नहीं हो रहा है। कई कवियों की रचनायें हिन्दी–साहित्य के लिए गौरव हैं । ऐसे रचनाकारों की संख्या पर्याप्त है । यही रचनायें साहित्य और समाज की स्थायी निधि बनती हैं। मैंने इस बात का बराबर ध्यान रखा है। सृजन साधना है, उसके साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए । तीसरे खंड की रचनायें गत वर्ष ही लिखी गई हैं। उसके सारे पद और अधिकांश दोहे एक सप्ताह में लिखे गये हैं । ऐसा

क्यों और कैसे हुआ—मैं स्वयं नहीं समझ सका । प्रायः देखा गया है कि काव्य—रचना की एक मनः स्थिति बन जाती है और रचनाकार लिखता चला जाता है। कविता सुनियोजित ढंग से नहीं लिखी जा सकती । वह एक प्रकार का सहज प्रतिक्रियात्मक भावावेग ही है जो शब्दों में व्यक्त होता है । प्रबंध काव्य ही सुनियोजित होता है।

संग्रह में मेरे द्वारा लिखी गई सारी कवितायें नहीं दी गई हैं। कुछ चुनी हुई कवितायें ही इसमें संग्रहित हैं । इनके चयन में मुझे प्रतिष्ठित कवि व साहित्यकार श्री श्रीनिवास जी शुक्ल तथा छन्द—मुक्त कविता के समर्थ कवि श्री सनागो जी का परामर्श मिला है । शुक्ल जी ने भूमिका लिखकर इन्हें अच्छी कवितायें होने का प्रमाण—पत्र भी दिया है । मैं इन दोनों के प्रति कृतज्ञ हूँ । जिन पत्र—पत्रिकाओं, आत्मीयजनों ने इन्हें पूर्व में छापा अथवा छपवाने के लिये प्रेरित किया उनका भी सादर स्मरण करता हूँ । सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली के व्यवस्थापक प्रो0 कृष्णदेव शर्मा यदि इसे छापने के लिए तुरन्त तैयार न होते तो शायद इसका प्रकाशन अभी भी संभव न होता । वे स्वयं साहित्य—पारखी और सुधी लेखक हैं। उनके दर्जनों ग्रंथ प्रकाशित हैं। इसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । मेरे सुपुत्र चिरंजीव अभिलाष बरसैंया ने इन रचनाओं को टंकित कर मेरा कार्य सरल किया है, इसके लिये उसे अनन्त शुभकामनायें और शुभाशीष । मेरी डेढ़ वर्षीय पौत्री अनन्या ने अपनी किलकारियों से मुझे निरन्तर तरोताजा बनाये रखा । उसे मेरा ढेर सारा प्यार ।

6 फरवरी, मेरा जन्म—दिन है । अपने जन्म—दिन की 67 वीं वर्षगाँठ पर अब तक 'मेरी अपनी' के रूप में डायरी में बंद कविताओं को 'आप सबकी' बनाकर आप सबको समर्पित करते हुये मुझे आत्म—तुष्टि हो रही है । विश्वास है कि आप सभी साहित्य--सुहृद इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे ।

6 फरवरी, 2003

—डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
सेवा—निवृत्त प्राचार्य
12—एम.आई.जी. चौबे कालोनी
छतरपुर (म0प्र0) 471 001

अनुक्रम

भावावेग

वाणी वन्दना	21
आज उन्हीं के नयन कोर की	22
अपने को तेरा कहते हैं	23
जब से तुम्हें निहारा	24
जाने बात कहाँ पर सच है	25
आज न जाने कौन पवन ने	27
क्या साहित्य इसे कहते हैं	28
अब न प्यार के गीत सुनाओ	29
मानव को मानव रहने दो	30
क्या तुमने उसको देखा है	31
अब श्रृगाल–सुत शोर सिंह जैसा करते हैं	33
भाव बहुत पर अर्थ न आता	34
अरे कर्म के कृष्ण उठो	35
अब कोकिल को जगह कहाँ है	36
लोग बढ़ते जा रहे हैं	39
संकल्पित था सब करने को	40
मेरा घर तो नन्दनवन है	42
हो किसान भइया	44
सूरज को नोंच–नोंच रात करें	46
हवा चली	47
तुमको प्रणाम ! सविनय प्रणाम्	48
हिन्दी उत्थापक महामना	49
चले गये मैथिलीशरण सियारामशरण तक	50

'माता' के 'युगचरण' पकड़ कर 51
पूज्य विनोबा तुम्हें नमन 53
हे श्रेष्ठ परम सर्जक सुजान 55
सहो, इसको भी सहो हे देवि 56
पुछल्ले 60
रोग–भोग 62
कपूत–सपूत 63
कैसी अजारी 63
रस ही जीवन में सार 63
कभी–कभी यह भी 64

चेतनाकाश

क्रांति का सूर्य 67
नये ईश्वर का निर्माण 69
जिन्दगी बेस्वाद ककड़ी 71
दर्पण 72
झुर्रियाँ–1 73
झुर्रियाँ–2 74
मद का नाग 75
जन्म कुंडली 76
वेदना की शाखायें 77
समय का चक्र 78
अस्तित्व और आशाओं के पक्षि–शावक 79
बिडम्बना 80
मुलज़िम–वकील बयान 81
दो आँखें 82
प्रतिष्ठा का सॉड़ और उड़ती गौरेया 83
पश्चिमी कीट 84
बैसाखी बनाम हिमालयी संघर्ष 85
आस्था–अनास्था 86
प्रतिष्ठा का जालीदार स्वेटर 87

आसमान 88
तमीज़ 89
राक्षस 90
खरगोश का खून 93
लालवर्णी खून के धब्बे कलूट 95
मुझे नींद नहीं आती 97
नाग 98
काव्यात्मक प्रतिक्रिया 102

जीवनबोध

विनय के पद 109
भक्ति के दोहे 116
नीति के दोहे 123
जीवन के दोहे 131
जगत के दोहे 135
कुछ मुक्तक 141
कुंडलिया 144
रही चाह तुम्हारी 144

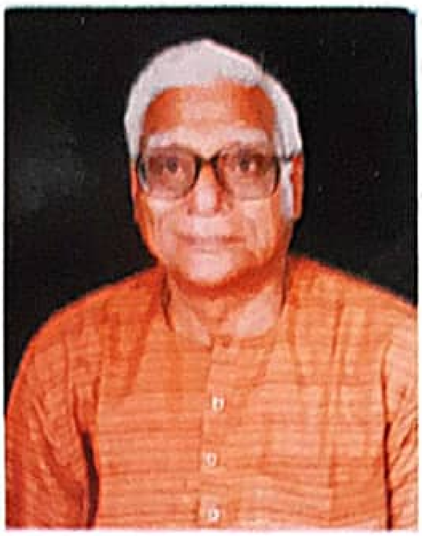

डॉ गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैया'

जन्मतिथि : 6 फरवरी 1937

शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी.

सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य । 31–12–96 को सेवानिवृत्त।

पुस्तकें :

हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोधप्रबंध), हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, रस विलास, वीर विलास, सुदामा चरित, चिन्तन–अनुचिन्तन, बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ), अरमान वर पाने का (व्यंग्य), निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य), अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य), तुलसी के तेवर, कर्म और आराधना, रचना से रचना तक, सृजन–विमर्श, समवाय, नारी : एक अध्ययन, मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, तथा अन्य।

सम्मान पुरस्कार :

1. महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा 'साहित्य श्री'।
2. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' तथा 'भारत भूषण' से सम्मानित।
3. नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा – 'साहित्य भारती'।
4. तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार।
5. अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संस्थाओं से सम्बद्ध :

1. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्यपरिषद के सदस्य।
2. पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र, ओरछा, म.प्र.।
3. म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष।
4. बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष।
5. अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि।

ISBN 81-8160-009-6

सार्थक प्रकाशन

100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049